राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा

रमेश शर्मा

गांधी शांति प्रतिष्ठान
नई दिल्ली

राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा
(2 अक्तूबर 1994 से 2 अक्तूबर 1995)

रमेश शर्मा

जनवरी 1997

प्रकाशक : श्री राजगोपाल पी० वी० मंत्री, गांधी शांति प्रतिष्ठान,
223, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन : 3237491, 3237493, फैक्स-(011)3236734
तार-सत्याग्रह, नई दिल्ली
मुद्रक : अशोक प्रिंटिंग प्रेस दिल्ली-110006 फोन : 3264968

आमुख

जब गांधी स्मृति यात्रा प्रारम्भ की गई तब बराबर सवाल उठ रहा था कि स्मृति यात्रा की क्या जरूरत है ? क्या हम गांधीजी को भूल चुके हैं ?

इस बात से हम सहमत हैं कि यह देश और दुनिया गांधीजी को भूली नहीं है। उनका नाम सभा-सम्मेलनों में निरन्तर लिया जाता है और उनकी तस्वीर चारों तरफ टंगी हुई है। सवाल सिर्फ याद करने का नहीं है। हम निरन्तर गांधीजी को याद करते जाएं, लेकिन हर काम उनके सिद्धान्त के विपरीत करें तो इसे सिर्फ दिखावा ही कहा जा सकता है। 50 वर्ष में देश की जो स्थिति बनी है उससे स्पष्ट है कि हम केवल गांधीजी का नाम लेते रहे हैं जबकि काम विपरीत दिशा में चल रहा है। औद्योगीकरण हो या शिक्षा, हर दिशा में उन मूल्यों का ही विकास हो रहा है जो गांधीजी नहीं चाहते थे। श्रम और मूल्य आधारित शिक्षा के बदले डिग्री और नौकरी आधारित शिक्षा का प्रचलन हो रहा है। हर हाथ को काम देने वाली उद्योग नीति के बदले हर हाथ से काम छीनने वाले औद्योगीकरण की नीति अपनाई गई है। आम आदमी की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली आर्थिक नीति के बदले लालच और उपभोग को विकसित करने वाली विकास नीति अपनाई गई है। ऐसे माहौल में सिर्फ यह कह देना पर्याप्त नहीं है कि हम गांधीजी को याद करते हैं। इस सवाल का भी जवाब देना होगा कि हम में से हरेक व्यक्ति या संगठन गांधीजी के रास्ते पर कहां तक चलते

हैं ? गांधीजी के बारे में बोलना आसान है इसलिए हमने आसान रास्ता अपना लिया है। गांधीजी के सिद्धान्तों के अनुकूल जीना कठिन है इसलिए हमने वह रास्ता छोड दिया है।

गांधी स्मृति यात्रा की जरूरत इसी कारण से महसूस की गयी कि हर शहर और गांव में लोगों से संवाद किया जाए, आम आदमी को गांधीजी के सिद्धान्तों के प्रति जागरूक किया जाए, और वर्तमान परिस्थिति में युवा वर्ग की भूमिका पर बहस छेड़ी जाए। गांधी स्मृति यात्रा के मूल्यांकन के वक्त यह बात साफ निखर कर आयी है कि इस देश की आम जनता गांधीजी को समझना चाहती है, उनसे प्रेरणा पाना चाहती है और एक ऐसे समाज में जीना चाहती है जो गांधीजी के सिद्धान्तों पर आधारित हो। अब चुनौती गांधीजन के सामने है कि वे इन उम्मीदों को पूरा करने के लिए क्या कदम उठाएंगे ?

यात्रा को प्रारम्भ से अंत तक सफल बनाने के लिए जिन साथियों ने भूमिका निभाई, जिन लोगों ने और संगठनों ने आर्थिक रूप से इस अभियान को साथ दिया उन सबके प्रति मैं आभारी हूं। आने वाले दिनों में इसी संदर्भ में जो भी अभियान प्रारम्भ होगा उसमें भी हम उन सबका फिर सहयोग चाहेंगे। यात्रा के दौरान जिन हजारों युवा मित्रों ने या संगठनों ने हमें सहयोग दिया उनके हाथ में यह प्रतिवेदन हम इसलिए पहुंचाना चाहते हैं कि वे इसका अध्ययन करें और अपने-अपने क्षेत्र में इस अभियान को और तेज करें। पूरे देश में यह अभियान तभी सफल होगा जब हम अपने-अपने स्थान पर गांधीजी के सिद्धान्तों के अनुकूल समाज रचना का प्रयास तुरंत प्रारम्भ करें।

राजगोपाल पी.वी
सचिव

राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा

रमेश शर्मा

भूमिका

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 125 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में देश, दुनिया में विविध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इस अवसर पर गांधी शांति प्रतिष्ठान ने गांधी स्मृति यात्रा का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम बनाया। सोचा गया कि यात्रा के द्वारा सघन रुप से शहर-शहर, कस्बे-कस्बे, गांव-गांव तक अपनी बात पहुंचाई जाए। लोगों तक पहुंचने का यात्रा एक अच्छा माध्यम है। यात्राओं की परम्परा अपने देश में पुरातन काल से चली आ रही है। लोक मानस, लोक गंगा से मिलने का यह एक सशक्त माध्यम है। देश, प्रकृति, समाज, लोक को जानने-समझने, देखने, मिलने के लिए यात्रा का अपना स्थान है। उसकी उपयोगिता एवं सार्थकता है।

देश की वर्तमान स्थिति भयंकर रूप लेती जा रही है। ऐसी स्थिति में हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा जा सकता है। जागरूक नागरिकों को करवट लेनी ही होगी। इस करवट की तलाश में गांधी स्मृति यात्रा की योजना एंव कार्यक्रम सामने आया। गांधी स्मृति यात्रा के मुख्य उद्देश्य निम्न रखे गए :—

उद्देश्य

लोक मानस में गांधी विचार के प्रति आस्था विकसित करना।

साम्प्रदायिक सद्भाव एवं सौहार्द विकसित करना।

स्वदेशी का संकल्प जागृत करना।

युवाओं के मन में अहिंसक समाज रचना के लिए आस्था जगाने का प्रयत्न करना।

क्षेत्र में ऐसे समूहों व व्यक्तियों को प्रोत्साहित करना, जिनके माध्यम से रचनात्मक कार्यों को आगे बढ़ाया जा सके।

पंचायत राज के सही स्वरूप के प्रति समाज की समझ बनाना।

गांधी साहित्य एवं अन्य सत्-साहित्य को जन-जन तक पहुंचाना।

यात्रा 2 अक्तूबर, 1994 को भोपाल (म0प्र0) से प्रारम्भ हुई। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, चंडीगढ़, हरियाणा एवं दिल्ली को रखा गया। 2 अक्तूबर, 1995 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि पर यात्रा का समापन हुआ।

यात्रा क्षेत्र

2 अक्तूबर से 31 दिसम्बर, 1994 तक यात्रा मध्यप्रदेश के भोपाल, बैतूल, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, जबलपुर, सतना, रीवा, सीधी, शहडोल, मण्डला, सिवनी, बालाघाट, राजनादगांव, दुर्ग, बस्तर, रायपुर, बिलासपुर, सरगुजा, रायगढ़ जिलों में रही।

1 जनवरी से 28 फरवरी, 1995 तक बिहार के गुमला, रांची, जमेशदपुर, हजारीबाग, धनबाद, गिरडीह, जमुई, मुंगेर, भागलपुर, देवघर, बांका, दुमका, गोड्डा, साहिबगंज, कटिहार, पूर्णिया, सहरसा, सुपौल, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, मोतिहारी, बेतिया, गोपालगंज, सीवान, सारण, वैशाली, पटना, जहानाबाद, नालंदा, नवादा, गया, औरंगाबाद, पलामू, भोजपुर, आरा, रोहतास, बक्सर जिलों का कार्यक्रम रहा।

१ मार्च से 10 अप्रैल, 1995 तक उत्तर प्रदेश के बलिया, गाजीपुर, वाराणसी, सोनभद्र, मिर्जापुर, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, फैजाबाद, अकबरपुर, शाहगंज, आजमगढ़, देवरिया, गोरखपुर, गोंडा, बाराबंकी, लखनऊ, कानपुर जिलों में यात्रा घूमी।

31 मई, 1995 मुरैना (म0प्र0) से यात्रा पुनः प्रारम्भ हुई।

1 जून, से 31 जुलाई, 1995 तक राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर, अलवर, दौसा, जयपुर, टोंक, भीलवाड़ा, चित्तौड़, बांसवाड़ा, डुंगरपुर, उदयपुर, राजसमन्द, अजमेर, सीकर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर जिले में यात्रा ने कार्यक्रम किए।

1 से 15 अगस्त, 1995 पंजाब में भटिण्डा, जालंधर, अमृतसर, गुरुदासपुर, पटियाला जिलों में यात्रा रही।

16 से 18 अगस्त, 1995 जम्मू-कश्मीर के जम्मू क्षेत्र में यात्रा का कार्यक्रम रहा।

19 से 31 अगस्त, 1995 हिमाचल में कांगड़ा, चम्बा, हमीरपुर, बिलासपुर, मंडी, शिमला, सोलन जिलों में यात्रा के कार्यक्रम हुए।

1 से 4 सितम्बर, 1995 चंडीगढ़ में यात्रा रही।

5 से 30 सितम्बर, 1995 हरियाणा में पंचकुला, अम्बाला, यमुनानगर, कुरूक्षेत्र, करनाल, पानीपत, सोनीपत जिलों में यात्रा रही।

1 से 2 अक्तूबर, 1995 दिल्ली में यात्रा रही। 2 अक्तूबर को प्रभातफेरी के बाद राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि पर यात्रा का समापन कार्यक्रम हुआ। प्रार्थना सभा के साथ यात्रा पूरी हुई।

एक झलक

यात्रा के दौरान विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। जनता तक अपनी बात, विचार पहुंचाने के लिए विभिन्न माध्यमों का सहारा लिया गया। गोष्ठी, भाषण, संवाद, चर्चा, एकल नाटक, नुक्कड़ नाटक, सभा, गीत, प्रार्थना, फेरी, सम्पर्क, साहित्य बिक्री आदि के माध्यम से जनता तक विचार पहुंचाने का प्रयास किया गया।

यात्रा को व्यापक तौर पर जन सहयोग प्राप्त हुआ। जन सहयोग में भोजन, निवास व्यवस्था, वाहन के लिए डीजल, तेल के साथ-साथ आर्थिक सहयोग भी प्राप्त हुआ।

यात्रा में साथियों ने समय देकर सहयोग प्रदान किया। स्थानीय स्तर पर भी अनेक साथियों का सराहनीय सहयोग मिला।

यात्रा शहर, कस्बे, गांव, ढाणी, टोला (गांव का छोटा हिस्सा) तक पहुंची।

यात्रा में प्रारम्भ में दो जीपें एक बड़ी बस थी। जो मध्य प्रदेश में रही। बिहार एवं उत्तर प्रदेश की यात्रा दो जीपों पर रही। राजस्थान, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, चड़ीगढ़, हरियाणा, दिल्ली की यात्रा मिनी बस में हुई।

यात्रा ने विभिन्न प्रांतों के 121 जिलों का भ्रमण किया।

साहित्य बिक्री भी यात्रा का एक प्रमुख अंग रहा।

नेतृत्व

विभिन्न समय पर विभिन्न साथियों ने यात्रा की कमान संभाली।

मध्य प्रदेश में यात्रा का नेतृत्व अक्तूबर-नवम्बर, 1994 में श्री राधेश्याम योगी ने किया। इनके बाद युवा साथी श्री संतोष द्विवेदी ने कमान सम्भाली। इस समय वरिष्ठ साथी श्री इन्द्रलाल मिश्र एवं श्री रमेश शर्मा का सहयोग यात्रा को मिला।

बिहार मे श्री हवलदारसिंह हलधर के नेतृत्व में यात्रा ने सफलतापूर्वक जनवरी-फरवरी, 1995 में कार्यक्रम सम्पन्न किया। श्री रवीन्द्र प्रताप, डा. मनोज, श्री सुरेन्द्र कुमार, श्री वासुदेव मैहतो, श्री रमेश शर्मा आदि का सहयोग मिला।

उत्तर प्रदेश में मार्च-अप्रैल में नेतृत्व श्री जितेन्द्र भाई, रामप्रवेश शास्त्री, डा0 रागिनी प्रेम ने सम्भाला।

मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, चंडीगढ़, हरियाणा, दिल्ली में 31 मई से 2 अक्तूबर, 1995 तक यात्रा का नेतृत्व श्री रमेश शर्मा ने सम्भाला। श्री रामसिंह भाटी, श्री जितेन्द्र नाथ द्विवेदी, श्री अखिलभाई, श्री देवीशरण देवेश, श्री महावीर त्यागी, श्री सुरेशशर्मा, श्रीदेसराज डोगरा, श्री सवाई सिंह, श्री रामदयाल खण्डेलवाल आदि का सहयोग मिला।

हिम्मत से पतवार सम्भालो

कुछ साथियों को यात्रा का इस प्रकार किन्हीं भी कारणों से बंद होना दुखदायी एवं असहनीय लगा। उन्होंने यात्रा को पुनः प्रारम्भ करने की इच्छा व्यक्त की तथा इसे चुनौती के रूप में स्वीकार कर यात्रा के पुनः प्रारम्भ की योजना पर विचार करना शुरु किया। प्रतिष्ठान के मंत्री श्री राजगोपाल पी. वी. एवं युवा विभाग के श्री रमेश शर्मा ने योजना बनाकर यात्रा का कार्यक्रम बनाना शुरु किया। अनेक साथियों के सहयोग से यात्रा 31 मई, 1995 को मध्य प्रदेश के मुरैना जिले के महात्मा गांधी सेवा आश्रम, जौरा से श्री रमेश शर्मा के नेतृत्व में प्रारम्भ हुई।

जून-जुलाई माह का कार्यक्रम राजस्थान का बनाया गया। इसे लेकर कुछ साथी चिन्तित हो गए कि गर्मी के दिनों में यात्रा में बहुत कठिनाई होगी। कुछ वरिष्ठ साथियों ने समय बदलने की बात भी रखी। अंत में चर्चा के बाद श्री सवाईसिंह ने विश्वास के साथ कहा कि राजस्थान समग्र सेवा संघ, राजस्थान के संयोजन की जुम्मेवारी सम्भालेगा। उपस्थित सभी साथियों ने इसका स्वागत किया और यात्रा के रास्ते में दिखने वाली यह झिझक भी दूर हुई। राजस्थान ने अपनी परम्परा अनुसार यात्रा का भव्य स्वागत एवं आयोजन किया।

यात्रा वाहन

राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा का वाहन बापू चित्रावली से सजाया गया था। रंगीन आकर्षक चित्रों को वाहन पर चित्रित किया गया था। वाहन पर अनेक सूक्तियां लिखी हुई थी। उदाहरण के तौर पर "हिंसा से कोई मसला हल नहीं होता।" "आवश्यकता से अधिक लेना चोरी है।" "हिंसा नहीं, कभी नहीं, कहीं नहीं।" "ईश्वर अल्लाह तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान।" "वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड़ पराई जाणे रे।" वाहन के एक और "मेरे सपनों का भारत" का चित्र बना था। एक बड़े बोर्ड पर चित्र के साथ गांधीजी का "अचूक ताबीज" लिखा हुआ था।-

"जब कभी आप दुविधा में हो या आपको अपना स्वार्थ प्रबल होता दिखाई दे तो यह नुस्खा आजमा कर देखिएगा। अपने मन की आंखों के सामने किसी ऐसे गरीब और असहाय व्यक्ति का चेहरा लाइए जिसे आप जानते हों और अपने आपसे पूछिए कि क्या आपकी करनी उसके किसी काम आएगी ? क्या उसे कुछ लाभ होगा ? क्या उस काम से उसे अपना जीवन और भविष्य बनाने में कुछ मदद मिलेगी ? दूसरे मानों में क्या आपकी करनी हमारे देश के लाखों, करोड़ों, भूखे नंगे एवं अतृप्त आत्मा वाले लोगों को स्वराज्य की राह दिखाएगी?

बस इतना सोचते ही आपकी सारी दुविधाएं दूर हो जाएंगी और स्वार्थ मोम की तरह पिघलकर बह जाएगा।"

संवाद की प्रक्रिया

वाहन की बनावट, सजावट के कारण सहज ही लोग वाहन की और आकर्षित हो जाते थे। आकर्षण एवं ध्यान तब और भी बढ़ जाता था जब ध्वनि प्रसारक यंत्र (माईक) पर बापू के प्रिय भजन, गीत चलते थे। चलते-चलते, बीच-बीच में यात्रा के उद्देश्यों की घोषणा एवं कार्यक्रम की सूचना भी प्रसारित की जाती रही। वाहन को देखने के लिए लोग गांव, कस्बे, शहर के मोड़, चौराहे पर एकत्र हो जाते थे और हमें एक अवसर मिल जाता अपनी बात जनता के समक्ष रखने का। अपनी बात हम लोग भाषण के माध्यम के अलावा गीत, नुक्कड़ नाटक से भी रखते थे। गीत, नुक्कड़ नाटक में लोग ज्यादा रुचि दिखाते। विभिन्न विधाओं के प्रयोग से कार्यक्रम अधिक प्रभावशाली बन जाता था। आज की परिस्थिति और गांधी की प्रासंगिकता, गांधी विचार में आज की समस्याओं का समाधान, वर्तमान कठिनाईयों में हमारी जुम्मेवारी एवं कर्त्तव्य, बहुराष्ट्रीय उद्योगों का दबाव और स्वदेशी की आवश्यकता, गरीबी, बेरोजगारी और नशे का फैलता जाल, युवकों का आह्वान, लोक शक्ति की संभावनाएं आदि विषयों पर संवाद करने का प्रयास इस यात्रा के दौरान खूब हुआ।

परम्परा जिन्दा है

यात्रा के दौरान गांव, कस्बे, शहर के दर्शन तो हुए ही साथ ही जंगल, पहाड़, नदी, नाले, पठार, समतल, रेगिस्तान, बीहड़ को भी देखने का अच्छा अवसर मिला। एक ओर सूखी, अनऊपजाऊ, परती, बेकार भूमि तो दूसरी ओर लहलहाती हरियाली से भरपूर फसलों से पटी भूमि के दर्शन हुए। पहाड़ों से बहते झरने, बर्फ से ढकी चोटियां, हरियाले वनों ने मन को आनन्द से भर दिया। भोगवाद की इस अंधी दौड़ में आज भी भारत माता के लाड़ले ग्रामीण स्नेह से ओत-प्रोत हैं। इनके दिल आज भी सादगी, सरलता, सहजता, अपनेपन, परम्परा से भरे हैं। इन पर अभी किसी भोगवादी संस्कृति, दूरदर्शन, विज्ञापन की काली छाया नहीं पड़ी है। इसलिए आज भी अपनी मस्ती में जीवन जी रहे हैं।

विभिन्नता में एकता

चाहे मध्यप्रदेश के छत्तीसगढ़, सरगुजा के वनों में रहने वाला आदिवासी हो, चाहे बिहार के पिछड़े कहे जाने वाले क्षेत्र का मुसहर जाति का कोई भूमिहीन मजदूर, चाहे उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में विकास से जूझता नागरिक, चाहे

चम्बल का आत्म समर्पणकारी बागी, चाहे राजस्थान के फैले रेगिस्तान में विकास की चकाचौंध से एकदम दूर, जीवन के आवश्यक तत्व पानी की जुगाड़ करता हुआ और विद्यालय, औषधालय, सड़क, विद्युत आदि से अछूता, लम्बी दूरी में फैले गांव में रहने वाला भील, चाहे जम्मू-कश्मीर या हिमाचल में प्राकृतिक सौन्दर्य से ओतप्रोत नजारों में रहने वाले सादे जन, चाहे पंजाब, हरियाणा के तथाकथित विकास के थपेड़े खाते या विकास के झूले में झूलते अपनी परम्परा से दूर जाते पंजाबी या हरियाणवी। मगर अतिथि-सत्कार की परम्परा को आज भी किस अदा से निभा रहे हैं यह देखकर देश की परम्परा की मजबूत जड़ों का ख्याल आए बगैर नहीं रह सकता। यह सच्चाई है कि पंजाब, हरियाणा में अतिथि सत्कार के तरीकों में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। जहां-जहां भोगवादी संस्कृति, विज्ञापन, दूरदर्शन या तथाकथित विकास की काली छाया नहीं पहुंची है वहां तो पुरानी परम्परा स्पष्ट रुप से नाचती, गाती, झूमती, इठलाती दिखती है। मगर जहां विकास का जाल फैल रहा है वहां इनकी मस्ती में अंतर नजर आता है।

गांधी की चाह

गांधीजी की बात उनके विचार सुनने को आज भी लोग लालायित हैं। गांधीजी की बात उन तक पहुंच नहीं पाई ऐसा भी देखने को मिलता है। गांधीजी के बारे में अनेक गलतफहमियां हैं, और फैलाई गई हैं। गांधीजी की छवि को कमजोर कर लोगों की दृष्टि में लाया गया है। बहादुर, वीर, निडर, सच्चे, ईमानदार, जुझारू, भारतीय विरासत के वाहक गांधीजी की छवि लोगों तक नहीं पहुंच पायी। कहीं चूक रही है। इस ओर व्यापक ध्यान देने की आवश्यकता महसूस होती है।

आज भी गांधी विचार को लोग जानना, समझना चाहते हैं। गांधी विचार में युवा भी रुचि लेते हैं। अच्छे ढंग से युवाओं के सामने विचार रखा जाए तो वे उसे ध्यान से सुनते हैं। उस पर चर्चा करते हैं। प्रश्नोत्तर करते हैं। अपने ढंग से प्रतिक्रिया करते हैं। यात्रा के दौरान कितने ही मौके आए जहां स्पष्ट रूप से देखने को मिला कि युवाओं ने हमारी बातें सुनी और अपनी राय दी। चाहे राजस्थान में पीलीबंगा हो या हिमाचल में शिमला। यात्रा राजस्थान के अंतिम पड़ावों की ओर बढ़ते हुए पीलीबंगा से गुजर रही थी। यहां के लिए कोई कार्यक्रम तय नही था मगर श्री रामदयालजी खण्डेलवाल ने कॉलेज देखा और वाहन को रुकने को कहा तथा कार्यक्रम हेतु वहां के अधिकारियों से बातचीत प्रारम्भ की। अधिकारियों की ओर से कुछ झिझक दिखाई पड़ी। उनका कहना था कि गांधीजी के संबंध में छात्र रुचि नहीं लेगें। 45 मिनट के पाठ्यक्रम

यात्री दल वाहन के साथ

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से अपनी बात रखता यात्री दल

खेतों में किसानों से बातचीत

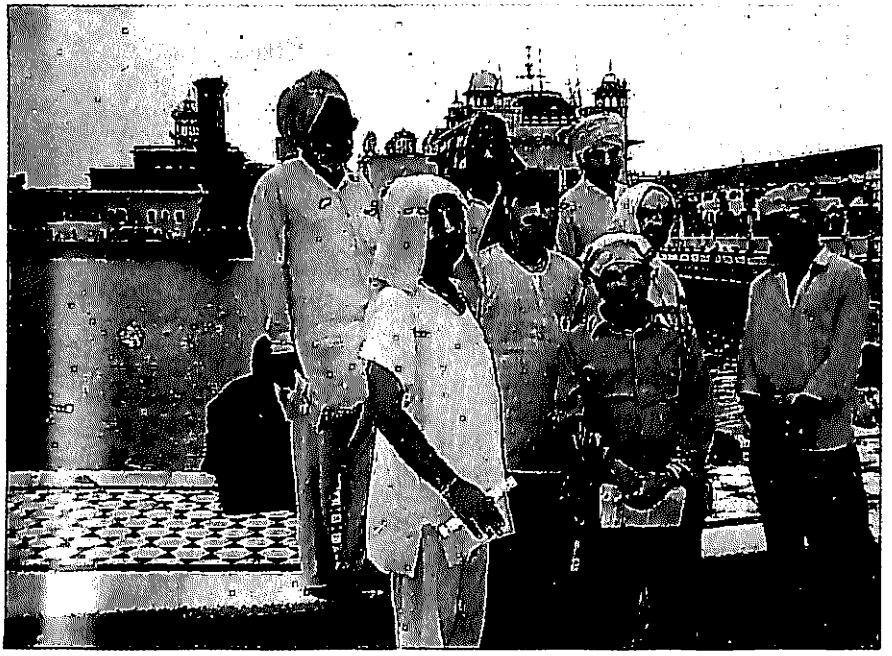

स्वर्ण मन्दिर (अमृतसर) में यात्री दल

भविष्य की आंखों में बापू के सपने

गांव से सीधा संवाद

राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा दल के प्रमुख श्री रमेश शर्मा सभा को सम्बोधित करते हुए

दिल्ली की सीमा पर यात्री दल का स्वागत

के समय में भी कठिनाई से पढ़ पाते हैं। यात्रा टोली ने कार्यक्रम की जुम्मेवारी अपने ऊपर लेते हुए कहा कि अगर छात्र हमारी बात नहीं सुनना चाहेंगे तो हम तभी कार्यक्रम समाप्त करके चले जाएंगे। अधिकारीगण आश्चर्यचकित रह गए जब यात्रा टोली ने डेढ़ घंटे तक बड़े सहज, सरल ढंग से छात्रों में कार्यक्रम चलाया और छात्रों ने रुचि लेकर सुना। कार्यक्रम में कुछ छात्रों को तो खड़े रहना पड़ा। यह बात भी ध्यान देने की है कि यात्रा टोली जब कालेज प्रांगण में पहुंची तो उसे सुनने को मिला था कि "आ गये गांधी वाले..... इनको.. ..तो गोली मार देनी चाहिए।" यहीं से हमने अपनी बात कहनी प्रारम्भ की और कार्यक्रम ऐसा प्रभावशाली रहा कि छात्रों ने बाद में भी प्रश्नोत्तर किए। वे और समय चाहते थे मगर हमें अगले कार्यक्रम का दबाव था इसलिए हमने यहां से विदा ली।

इसी प्रकार यात्रा शिमला के संजौली महाविद्यालय में पहुंची। कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। कुछ साथियों का कहना था कि यात्रा टोली अपनी बात पहले रख ले बाद में छात्र नहीं रुक पायेंगे मगर हमारी राय थी कि पहले छात्र अपनी बात रखें फिर हम अपनी बात रखेंगे। अनेक छात्रों ने अपनी बातें रखी। कुछ युवा साथियों ने बहुत ही अच्छे ढंग से विचार रखे। बाद में हमने अपनी बातें रखी। चर्चा इतनी प्रभावशाली एवं रुचिकर रही कि समय का भी ध्यान नहीं रहा। अंत में भागदौड़ करनी पड़ी क्योंकि इसके बाद कालीबाड़ी में यात्रा का नागरिक अभिनन्दन कार्यक्रम था। जहां पहुंचने के लिए कुछ समय चाहिए था। संजौली से यात्रा टोली जब कालीबाड़ी पहुंची तब तक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल भी पहुंच चुके थे। बाद में इस महाविद्यालय में गांधी अध्ययन केन्द्र की स्थापना भी हुई।

यात्रा जब मध्य प्रदेश, बिहार के आदिवासी क्षेत्र से गुजरी तब लोगों की गांधीजी के प्रति श्रद्धा, भावना देख कर हृदय गदगद हो गया। वाहन पर सजे, लगे गांधीजी के चित्र पर फूलमालाएं, श्रद्धासुमन चढ़ाने के लिए अनेक बार लम्बी कतारें देखी गईं। यात्रा को लम्बे समय तक रुकना पड़ा। सैकड़ों की तादाद में स्त्री, पुरुष, बच्चे, युवा गाते, नाचते, ढोल बजाते यात्रा के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए दूर-दूर के गांवों से आए। चेहरों पर उत्साह, मन में श्रद्धा एवं आस्था, भविष्य में विश्वास, पांवों में थिरकन, हाथों में वाद्य एवं श्रद्धासुमन, जीवन में मस्ती लिए लम्बी यात्रा के बावजूद कार्यक्रम में इन्हें पूरी रुचि लेते देख हमारी यात्रा की थकान भी रफूचक्कर हो जाती थी। नया उत्साह एवं विश्वास मन में भर जाता।

अनेक जगहों पर तो यात्रा के स्वागत के लिए ढोल, बाजे के साथ पांच-पांच

मील से ज्यादा चलकर आए और यात्रा का स्वागत कर नाचते, गाते यात्रा को अपने यहां दूरदराज गांव तक ले गए। जंगल, वनों के मध्य में बसे गांव अपने आप में एक दुनिया हैं। आज भी इनपर विकास की काली छाया का प्रभाव नहीं पड़ा है। प्रकृति की गोद में अपने ढंग से स्वावलम्बी जीवन जीने का प्रयास सरगुजा जिले के अम्बिकापुर तहसील के अनेक गांव कर रहे हैं। न सड़क, न बिजली, न बाजार, न स्कूल फिर भी जीवन में उत्साह।

गांधी वालों ने तो सुध ली

इस प्रकार की अनेक घटनायें यात्रा में हमारे अनुभवों का हिस्सा बनी। राजस्थान के जैसलमेर जिले में रायगढ़ के श्री चतरसिंह जाम एक जागरूक किसान हैं। खेती एवं पशुपालन इनका मुख्य कारोबार है। इनकी इच्छा थी कि यात्रा रायगढ़ से दूर डवलापार ढाणी में जरूर पहुंचे मगर यात्रा का वाहन नहीं जा सकेगा, क्योंकि सड़क या रास्ते की व्यवस्था नहीं है इसलिए जीप में हम सब लोग डबलापार पहुँचे। तीन कि. मी. में फैले इस गांव या ढाणी में 20 परिवार रहते हैं। न विद्यालय, न डाकघर, न पानी की व्यवस्था, बिजली की बात करना तो बेमानी होगा। हम पहुँचे एक गोल झोपड़ीनुमा स्थान पर जहाँ 15 छोटे-बड़े बच्चे बैठे थे। यह विद्यालय है जो श्री चतरसिंह जाम चलाते है तथा श्री भगवान नाम के युवा पढ़ाते हैं। 15 बच्चे विभिन्न कक्षाओं के हैं। गांव वालों से भी बातचीत हुई। यहाँ वोट मांगने वाले भी नहीं आते। सरकारी अधिकारी या कर्मचारी का तो कोई मतलब ही नहीं है। कौन जाए, क्यों जाए इस गांव में। सरकार, अफसरशाही, वोट की राजनीति, विकास की धारा सबसे मुक्त है यह गांव। यात्रा के पहुँचने पर उन्होंने कहा "चलो कम से कम गांधी वालों ने तो सुध ली।" ये लोग पाबूजी की पूजा करते हैं। संवाद एवं सम्पर्क के लिए आवाज एक सशक्त माध्यम है। थोड़ी ही देर में एक दूसरे को हांक (आवाज) लगाकर ही लोग एकत्र हो गए। भारत सचमुच गांव में ही बसता है।

टूटता संवाद

समाज में संवाद एवं संवेदना धीरे-धीरे कम होती जा रही है। आज का विकास इनको समाप्त करने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहा है। चाहे-अनचाहे समाज के विभिन्न संगठन, राजनैतिक, व्यापारी, शिक्षित भी इसी काम में लगे हैं। आज की व्यवस्था ऐसी बनती जा रही है कि वह संवाद एवं संवेदना को शून्य बनाकर ही जीवित रह सकती है। बैठक, चौपाल, चौराहा, परस (मिलने का सामूहिक स्थान) जैसे स्थान सूने होते जा रहे हैं। उस सभी सामूहिक स्थानों, कामों, उत्सवों, त्योंहारों, मिलनों पर लगातार चोट की जा रही है, जहां संवाद

एवं संवेदना का अवसर प्राप्त होता था। जहां संवाद होता था जिससे संवेदना उत्पन्न हो सकती थी, उन सभी शक्तियों को विभिन्न प्रकार के साधनों द्वारा समाप्त करने का काम जोरों से जारी है। जबकि संवाद एवं संवेदना के लिए कोई नया माध्यम बनाया नहीं जा रहा और पुराने माध्यम तेजी से टूट रहे हैं और तोड़े जा रहे हैं।

दूरदर्शन, रेडियो, समाचार-पत्र आदि प्रचार साधन जानकारी दे सकते हैं। श्रोता, पाठक बढ़ा सकते हैं मगर संवाद का जानदार, आमने-सामने का जीवित माध्यम वे नहीं बन सकते। समाज की मात्र जानकारी बढ़ने से संवाद और संवेदना नहीं बढ़ सकती। इसके लिए समाज का जीवित रहना जरूरी है। समाज में प्राणतत्व की बहुलता जरूरी है, और वह आज भी जीवित है दूरस्थ गांव में, आम नागरिक में।

यात्रा के दौरान "भिन्न भाषा भिन्न वेश, भारत अपना एक-देश" की सही तस्वीर देखने का मौका मिला। अनेक प्रकार की विभिन्नताएँ होते हुए भी आम नागरिक का दिल एकता की गूंज पैदा कर रहा है। भारत माता के सभी लाल इसको हरा-भरा, खुशहाल बनाने के लिए जी-जान से लगे हैं। सबके हृदय में भारत माता के प्रति अटूट श्रद्धा, अपनापन भरा है। यही वह शक्ति है जो इस देश, समाज को एक बनाए हुए हैं। इसे जोड़े हुए हैं। अर्न्तमन से एक है भारत माता। ऐसे में याद आती है कवि इकबाल की यह पंक्तियां "कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।"

साम्प्रदायिक सद्भाव की गहरी जड़ें

यात्रा के दौरान कितने ही ऐसे अवसर आए जिनमें सर्वधर्म समभाव, आपसी भाईचारा, समाज की एकता के प्रमाण को हमने देखा। याद आता है जोधपुर-जैसलमेर जिले की सीमा पर बसा-कलरा गांव, जहां मुस्लिम भाई रहते हैं। मुख्य धंधा खेती एवं गो-पालन। हर परिवार में दर्जनों और गांव में सैकड़ों गायें। शाम को गांव में संगीत का कार्यक्रम रखा गया। पूरा गांव नये-नये कपड़े पहनकर उपस्थित। नौजवानों ने भजन गाना शुरू किया। शिव-भक्ति से ओत-प्रोत भजन ने सभी को झुमा दिया। परिचय हुआ, गाने वाले मुस्लिम भाईयों से। इस धरती, संस्कृति, इतिहास से जुड़े भजनों, गीतों का कितना समृद्ध खजाना आज भी इन "अनपढ़" गांवों में भरा पड़ा है। ये जगाते हैं भाईचारे की भावनाएं। इनमें अक्षर ज्ञान वाला तो कोई-कोई ही नजर आ रहा था। मगर इनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण तथाकथित पढ़े-लिखों से बहुत ऊंचा था। धरती माता, गऊ माता के सहारे इनका जीवन चलता है। इनकी चाल में अपनी ही एक मस्ती भरी है। गांव के पास से ही मुख्य सड़क राष्ट्रीय मार्ग जाती है मगर इनका

जीवनक्रम अभी भी धरती एवं पशु के सहारे जुड़ा है। इनके भजन और गीतों की गूंज हर भारतीय की भावना को छू पाये, उन तक पहुंचे, तो कैसे ? आज के चालू गानों से तो इनकी तुलना करना भी पाप लगता है।

रामलीला वाले या सरकारी प्रचारक

आमतौर पर बच्चे सभी जगह एक जैसे ही मिले। मगर बड़े शहरों में बच्चे ग्राम्य क्षेत्र के बच्चों की तरह वाहन की ओर दौड़ते नहीं थे। शहरों की परिस्थितियां ऐसी है कि वे दौड़ भी नहीं सकते। मगर जब विद्यालयों में हम गए तो बच्चों ने बहुत ध्यान से सुना। सवाल खड़े किए, अपनी राय भी बताई। गांधी में रूचि दिखाते हुए साहित्य खरीदा। साहित्य बिक्री में गांधी द्वारा लिखित साहित्य की ज्यादा मांग रही। आज भी बच्चों के लिए सत्साहित्य कम उपलब्ध है। गांवों में तो बच्चों को, जब तक हम नाटक नहीं दिखाते या गाना नहीं गाते, यही सवाल होता था कि ये नाटक या रामलीला वाले हैं या किसी नई सरकारी योजना के प्रचारक।

साहित्य की मांग

यात्रा में साहित्य बिक्री के विभिन्न अनुभव आए। गांधी साहित्य की मांग, और चाह देखकर अच्छा भी लगा। एक नौजवान साथी ने यात्रा के वाहन को रोका और पूछा "क्या आपके पास गांधीजी की लिखी हुई भी कोई पुस्तक है।" श्री पंचम भाई ने कहा हमारे पास खूब गांधी साहित्य है। युवक ने फिर दोहराया "मुझे गांधीजी पर नहीं बल्कि गांधी की लिखी हुई ही पुस्तक चाहिए।" इस साथी ने गांधीजी की आत्मकथा, मंगलप्रभात, हिन्दस्वराज्य, मेरे सपनों का भारत आदि पुस्तकें खरीदी। साहित्य प्राप्त करने के बाद युवा साथी के मुख पर एक संतोष झलक रहा था।

राजस्थान में ही यात्रा चल रही थी, हम लोग एक सड़क के किनारे रुके और अपना कार्यक्रम शुरू किया। वहीं पास में एक पनवाड़ी की दुकान थी। कार्यक्रम के बाद उस दुकानदार साथी ने जो युवा था, अच्छी तादाद में साहित्य खरीदा।

इसी प्रकार एक युवा साथी साईकिल पर दूध बेचकर आ रहा था बातचीत हुई तो उसने साहित्य में रुचि दिखाई। साहित्य खरीदा। हमने पूछा कि भाई, आप करते क्या हैं ? "मैं दूध बेचता हूँ।" आप अपने लिए साहित्य खरीद रहे हैं या किसी और के लिए ? मैं पढ़ना चाहता हूँ। मेरी रुचि थी मुझे साहित्य मिल नहीं पा रहा था आज मिला है इसलिए बहुत सारा ले लेना चाहता हूँ।

साहित्य बिक्री के अनेक अनुभव यात्रा के दौरान आए। लोगों ने साहित्य खरीदा। सत्साहित्य, गांधी साहित्य सहजता से नहीं मिल पाता इसकी शिकायतें

भी की। बच्चों एवं युवा साथियों में साहित्य के प्रति रुचि देखकर बहुत खुशी हुई, चाहे यह संख्या बहुत बड़ी नहीं है।

ग्रामदान का प्रभाव : गांव की शक्ति

राजस्थान के एक छोटे से ग्रामदानी गांव बाड महावतान में यात्रा पहुंची। भैरवा जाति के 50 परिवार उस गांव में रहते हैं। साफ-सुथरा करीने से बना गांव। गांव में 25 बीघा जमीन चरागाह की है। गांव में 12 कुएं हैं एक हैंड पम्प है। कुएं आमतौर पर खेती की सिंचाई के लिए काम आते हैं। गांव सड़क से दूर कच्चे रास्ते से जुड़ा है। गांव में एक ग्रामसभा भवन है। आज़ गांव में उत्सव जैसा माहौल है। माईक बज रहा है। महिलाएं, पुरुष सभी काम में लगे हैं। बच्चे चहल-पहल कर रहे हैं। सभी बच्चे लड़के-लड़कियां खेल में शामिल है। यात्री दल के साथी नए-नए खेल सीखा रहे हैं। महिलाएं गाना गाते हुए भोजन बनाने में लगी है। पुरुष व्यवस्था के काम में लगे हैं। कुछ लोग चर्चा में लीन हैं। पूरा गांव सक्रिय है, उत्साही है। अंधेरा धीरे-धीरे बढ़ रहा है और भोजन की तैयारी हो चुकी है। नौजवान वर्ग भोजन के लिए लम्बी चौड़ी व्यवस्था कर रहा है। इसे देख सभी यात्री आश्चर्य से पूछते हैं कि क्यों हैं इतनी व्यवस्था?" "जी हां, पूरे गांव के बच्चे आपके साथ भोजन करेंगे।" हम लोग भोजन करने बैठे और थोड़ी दूर से महिलाओं ने समूह में गीतों की लहर प्रारंभ की। पूरे गांव का जीवंत दर्शन हमें हो रहा है। एक गांव, संगठित, सशक्त, एक परिवार बना गांव। ग्रामदान की भावना ने इस गांव को "एक बनेंगे नेक बनेंगे" का विचार दिया। इसी पर चलकर "बाड महावतान" आगे बढ़ रहा है। गांधी के सपनों को साकार करने में इस गांव ने अपना योगदान प्रारंभ किया है। "गांव का निर्माण गांव के द्वारा।" "गांव की शक्ति सच्ची शक्ति।" "गांव बना परिवार हमारा।" "गांव की धरती गांव का राज।" इन नारों को गांव वाले बोल रहे हैं और इसी ओर उनके कदम बढ़ रहे हैं। गांव की शक्ति बनेगी, बढ़ेगी तो राष्ट्र, समाज मजबूत बनेगा। भारत माता को मजबूत बनाना है तो गांव की शक्ति को मानना, जानना, बढ़ाना परमावश्यक है। गांव आज भी हमें जगा रहे हैं, मौका दे रहे हैं। यही देश की सच्ची शक्ति है।

जो देखा, समझा : मुद्दे या सवाल

यात्रा के माध्यम से जनता से एक अच्छा संवाद सधा। यात्रा के दौरान अनेक अनुभव आए। तथाकथित विकास के बावजूद आजादी के 48 वर्ष बाद भी आम जनता तक आवश्यक सुविधाएं भी नहीं पहुँच पाई। तथाकथित विकास भी कहीं रास्ते में ही अटक कर रह गया है। अपने को विकसित कहने वाले हरियाणा में भी कितने ही गावों में पीने के पानी की व्यवस्था के लिए लोग

गम्भीर संकट को झेल रहे हैं।

रोजगार के साधनों पर जोरदार हमला हो रहा है। रोजगार के अवसर कम हो रहे हैं। गांवों में रोजगार के अवसर लगातार कम ही नहीं हो रहे बल्कि मृत प्राय हो रहे हैं। जल, जंगल, जमीन से जनता का संबंध घटता जा रहा है। नागरिक के स्वयं निर्णय लेने की शक्ति का ह्रास हो रहा है। नागरिक परावलम्बी बनाया जा रहा है। संवेदना एवं संवाद समाज में हर स्तर पर कम हो रहा है। अन्याय के प्रतिकार की शक्ति कम होती जा रही है। व्यक्ति अपने तक सीमित होता जा रहा है। समस्याओं से पीड़ित है मगर उनसे जूझने की शक्ति नहीं जुटा पा रहा है। कहीं कोई प्रयास होता है तो उसे संगठित रूप में योजनाबद्ध ढंग से समाप्त करने की तैयारी ज्यादा नज़र आती है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति भी नई पीढ़ी को खोखला बना रही है। समाज, राष्ट्र, प्रकृति, नैतिक मूल्यों के प्रति वर्तमान शिक्षा पद्धति मौन नजर आती है। इनके प्रति छात्र-छात्राओं को जागरूक नहीं बना पा रही है।

प्रचार माध्यम (दूरदर्शन, रेडियो, समाचार, पत्र-पत्रिका) भी इस मामले में उल्टी ही गंगा बहा रहे हैं। हिंसा का ताण्डव बढ़ता जा रहा है। हिंसा की मान्यता जनता, समाज में बढ़ रही है। लोकतांत्रिक, अहिंसक साधनों की ओर न ध्यान दिया जा रहा है, न ही उन्हें मान्यता देने की तैयारी नज़र आती है। इस मामले में कोई कारगर कदम नहीं उठाएंगे तो स्थिति और अधिक भंयकर होगी।

उपभोक्तावादी संस्कृति का दबाव दूर-दराज तक के गांवों तक पहुँच रहा है। लोग इसकी पकड़ में जकड़े जा रहे हैं। विज्ञापनों के माध्यम से इसे और भी गहरा बनाया जा रहा है।

प्रांत, भाषा, जाति, समूह आदि के नाम पर टूटन जारी है। छोटी-छोटी सीमाएँ बनाने, बढ़ाने के प्रयास तेज हुए है। सत्ता एवं स्वार्थ की भूख ने नेतृत्व में गिरावट ला दी है। बाहुबल, दामबल के आधार पर हर वस्तु को तोलने के प्रयास तेज होते जा रहे हैं।

नशे की आदत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। नशे का प्रचार ज्यादा जोर से हो रहा है। हर छोटे गांव में शराब उपलब्ध की जा रही है। बीड़ी, सिगरेट, गुटखा तेजी से बढ़ रहा है। नशा अब सामाजिक बुराई नहीं माना जाता। ऐसा लगता है जैसे धीरे-धीरे सभी इसे सहन करते जा रहे हैं।

जीवन-पद्धति ही बदल रही है। समाज की दौड़ भारतीय संस्कृति, सत्य, अहिंसा, तप, त्याग, बलिदान गांधी विचार के प्रतिकूल जा रही है।

गांधी विचार के बारे में पर्याप्त गलतफहमियां फैली है, फैलाई गई हैं।

गांधी कमजोर है। गांधी की प्रासंगिकता नहीं है। गांधी दकियानूसी है। गांधी ने पाकिस्तान बनाया। गांधी विचार पुराना है। इसके साथ-साथ यह भी आरोप लगाया जाता है कि आज तक गांधी के अनुयायी ही सरकार चलाते रहे, सत्ता में रहे।

गांधी संस्थाएं, संगठन भी जनता तक गांधी का सही चित्र नहीं पहुंचा पाये। गांधी की या तो पूजा की गई या निन्दा की गई। गांधी-विचार पर सार्थक चिन्तन, मनन एवं अध्ययन का अभाव रहा। जो चिंतन, मनन, अध्ययन हुआ भी वह आम जनता तक या युवा पीढ़ी तक पहुँचा नहीं। गांधी विचार को जन-जन तक पहुँचाने का व्यापक प्रयास होना चाहिए। जागरूक गांधी, क्रांतिकारी गांधी, नये विचार का वाहक गांधी, विकास का सही प्रतीक गांधी, आज के संदर्भ में गांधी, बहादुर गांधी, प्रासंगिक गांधी जनता, युवा पीढ़ी के समक्ष पहुंचना चाहिए। "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है" कहने की शक्ति रखने वाला गांधी जन-जन तक पहुंचे। कथनी-करनी के अंतर को अपने जीवन में कम करने वाले साथी ही ऐसे गांधी को पहुंचा सकेंगें। अपने जीवन में सत्य, सादगी, तप, निष्ठा, भावना होगी तभी जनता पर प्रभाव पड़ेगा।

गांधी के प्रति युवा पीढ़ी में भी रूचि देखी गई। अनेक युवाओं ने गांधी साहित्य लिया। गांधी पर नहीं बल्कि गांधी द्वारा लिखित साहित्य की मांग अनेक स्थानों पर हुई। यह अच्छा लक्षण है। गांधी साहित्य, गांधी-विचार, जन-जन तक कैसे पहुंचे ? इसकी योजना बननी चाहिए।

युवा पीढ़ी गांधी के विचारों को सुनने को तैयार है, समझने को तैयार है। हमें अथक प्रयास करना होगा। हमें अभियान चलाने होंगे। लोगों तक पहुंचना होगा। ज्यादा से ज्यादा युवाओं को आगे आना होगा तथा अभियानों में माध्यम से जनता के समक्ष जाना चाहिए। जिससे ये भ्रम टूटे कि मात्र वरिष्ठ, वृद्ध, बुजुर्ग ही गांधी को मानते, जानते समझते हैं। नई पीढ़ी पर युवा साथियों का भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

युवा साथी देशभर में आगे आएं। अभियान, यात्रा, कार्यक्रमों का संचालन, नेतृत्व युवा साथी करेंगे तो कार्यक्रम ज्यादा प्रभावी होगा साथ ही भविष्य में भी कार्यक्रम चलेंगे यह सम्भावना बढ़ेगी। वरिष्ठ साथियों को साधन, व्यवस्था, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन की जुम्मेवारी सम्भालनी चाहिए।

स्वदेशी, स्वावलम्बन, निर्भयता, विकेन्द्रीकरण, भारतीय जीवन पद्धति, संस्कृति, सद्भावना, सहकार, स्वराज्य, अहिंसा, साम्प्रदायिक सद्भावना, मानवीयता, नैतिक मूल्य, नशा मुक्ति, राष्ट्रीय एकता आदि विषयों पर ज्यादा विचार रखने की आवश्यकता महसूस होती है। संवाद कैसे बढ़े ? संवेदना कैसे

बढ़े ? अन्याय का प्रतिकार करने की शक्ति कैसे जागृत हो ? ''मुझे क्या पड़ी है'' स्थिति से समाज कैसे उबरे ? मैं जुम्मेवार हूं। मेरी भूमिका समाज के लिए महत्वपूर्ण है। मैं जगूंगा तब समाज जगेगा। समाज के हर पहलू से मेरा मतलब या संबंध है। मुझे ही कुछ करना होगा। ये स्थिति उत्पन्न होगी तभी बदलाव की सम्भावनाएं बढ़ेगी। बदलाव का रास्ता खुलेगा।

भविष्य की सम्भावनाएँ

गांधी विचार को जन-जन तक पहुंचाने के लिए विभिन्न यात्राओं का आयोजन व्यापक तौर पर निरन्तर होना चाहिए। यात्रा प्रभावी रहे इसका पूरा प्रयास करना होगा। यात्रा में विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करना चाहिए।

यात्रा में युवा, निष्ठावान कार्यकर्ताओं की भागीदारी उपयोगी एवं प्रेरणादायक़ है। यात्रा के दौरान एवं बाद में भी संवाद एवं सम्पर्क रखना जरूरी है। कार्यक्रम में निरन्तरता बनी रहनी चाहिए। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से बार-बार जनता तक पहुंचना अच्छा है।

संस्थाओं के घेरे, प्रागंण, भवन से बाहर निकलने की तैयारी जरूरी है। संस्थाएं अपने ही जाल में फंसती जा रही हैं। अपने को सीमित रख रही हैं, कर रही हैं। जन-जन तक पहुंचने का व्यापक प्रयास करके ही संस्थाएं सार्थक कदम उठा सकती हैं। जनता के बीच जाने पर ही संवाद की सार्थकता है।

युवाओं, छात्रों, नागरिकों से सीधे मिलने का यात्रा एक सशक्त माध्यम है। इस देश को जानने-समझने, पहचानने में यात्रा की अहम भूमिका है। अपनी बात कहने तथा जनता की बात सुनने, उसका ज्ञान जानने हेतु भी यात्रा का अपना स्थान है। जिन प्रदेशों में यात्रा का कार्यक्रम नहीं कर पाये, वहां भी यात्रा करने की सार्थकता नजर आती है।